Poems

From Facebook

From 2014

By :-Kumar Arunodaya

गर, धरा साथ दे...तो क्या बात है...!
बस, तुम साथ दो... तो और बात है...!!
होली की रंगीनियत, बेक़सूर रहे...!!

वर्षांत पर, मनोभावों की अभिव्यक्ति, एक सहमा सा डर!!...
ऐ वक़्त, जरा ठहर.., ज़रा सहम,
क्या पता, क्या बचा..,
क्या रहा अधूरा!..
वक़्त ने तो दिया था सभी को,
एक सा सहारा।
वक्त-वक़्त की चाल है,
बेमिसाल भी बेहाल है!..
अगर कुछ और भी बचा,
तो वक़्त ठहर ही जा।
कुछ और भी विध्वंश, अगर कही..,
निपट ले, यही ज़रा।
कल की कौन जाने,
क्या पता, वो किसकी सुने..,
अगर चलो उस पार प्रिये..,
पावन-परिणय सा हो भला!.
सुबह की बूँद-बूँद में ओस हो,
हर ओस में एक आस हो।
एक आस सा अहसास हो,
अहसास में तुम प्राण प्रिये!..
नव-वर्ष में तुम प्राण प्रिये,
वक़्त को ही साध चलो,
ग़र वक़्त साधन हो चले,
अहसास में, सब प्राण प्रीतम।
सब प्राण प्रीतम जहाँ बस चले,

मनोभाव की संसार तुम।
जहाँ संसार ही प्राण प्रिये,
बस यूँ ही बसो, नव-वर्ष तुम।
ताकीद है, यह वर्ष तुम्हे,
छोड़ न जाओ कोई प्राण यहाँ!..
ग़र ग़म अगर भी साथ हो,
ठहर जा, सहम जा तू वर्ष यही।
जब पाक हो, तेरा ज़मीर,
फिर कहे बिना आ जाना तुम..,
विश्वास रखो, हम हो न हो..,
पर प्राण प्रियो की फ़ौज सब,
ग़र आलिंगन बद्ध हो जाये, सब
फिर भी मौन ही हँसना तुम।
ऐ वक़्त, ज़रा ठहर, ज़रा सहम!..
-डॉ .अरुणोदय

Onel.., our angel..!!
You ruled our hearts...,
You stirred our lives...,
We saw you chirping..,
We saw you dancing..,
We heard you singing..,
We saw you playing..,
We saw your excellence..,
At last...,
We saw you in flames too...!!
You may be in other world,
But we never feel,
You left us..!!
May God assign you to,
light up his own world.
We miss you, betu..!

महाभारत के संजय के संजय से उतरी,
शिवाजी ने कहा, अप्रील की खूबसूरत फूल,
अप्रैल ओनल!..
चहकती थी, फुदकती थी,
चहुँ ओर बिखेरती थी,
अपनी खुशबू और दरियादिली।
ईश्वर भी खुश हुआ था,
अपनी खुशियो की पोटली,
जमीं पर भेज कर।
तू तो जीव से लड़ने वाली थी,
खुद से ही कैसे हार गयी..?
कहीं ऐसा तो नही कि,
हमारे पुरुषार्थ से तुम्हारा भरोसा टूट गया हो..?
मैंने देखा है तुम्हे, जलते हुए..,
तुम्हारे चिता की तपिश में,
आत्माओं को मरते हुए।
हम खड़े बस तमाशाई बने रहे,
शायद किसी और चिता की तपिश की तलाश में।
यकीं है,
तुम कभी तो आओगी।
इस घर न सही,
किसी घर ही सही।
हमारे शब्द भी ख़त्म और,
मोमबत्तियां भी खत्म।
अँधेरे में ही सही,
क्षण में ही सही,
कभी तो आना और हमें दीप्त कर जाना,
क्योकि हमने तो तुम्हे जलाया है, मोक्षदा में।
कर्मकाण्ड भी किये है।
हो सके तो,
हम कायरों को माफ़ कर देना,

तुम्हे न तो समझ सके,
और न ही बचा सके।
"" ओ री चिरैया, अंगना में फिर आजा रे""
शुक्र है, हमने सहना सीख लिया है..,
वरना कहने की नौबत ही नहीं आती!..
खौफ़ खाओ, हमारी फितरतो से..,
यहाँ जनाज़ो ने भी इश्तकबाल किया है!..
-स्वान्तः सुखाय(..

हूँ तो मैं ऐसा ही!..
जीजिविषा होनी चाहिए.., इंसान रूप में कर्मवीर ही जीता है।
सोच तो मुर्दो की होती है.., जो उठने के लिए भी चार कंधे खोजते है!...

बड़ा आसरा था.., हवा के झोंकों पर!...
बड़े बेरहम निकले!...

पर वालों के आशियाँ उजड़ गए...,
बे-परो ने आशियाँ बसा ली!...

नसीब भी नसीब से.., नसीब जैसे नसीब वालों को ही नसीब होता है!..
(कहीं सुना था(..

ये बे-मौसम बारिश भी क्या रंग लेकर आया है!..
अमीर पकौड़े खोज रहे है...,
और गरीब जहर(...

मेरे टूटने की वजह उन जौहरियों से पूछो...,
जिनकी ख्वाहिश थी...,
मुझे कुछ और तराशा जाये!!..

I am not a HANDSOME man...., but i can lend my HAND to SOME one in need...)

बड़े याद आओगे, कलाम साहेब!..
"ऐसी करनी कर चलो..., तुम हँसो, जग रोये"

इतनी जोड़ी आँखे जहाँ हो..,
वो मंजर अच्छा लगता है!..
सारा जहाँ घूम के आ गये...,
अब अपना घर अच्छा लगता है!!...

पता नही, हम ज़िन्दगी को इतने हिसाब से क्यों जीना चाहते है..?
ग़र ज़िन्दगी ना हुई.., कन्ट्रोल वाली राशन की दूकान हो गई!..
ग़र मिले न मिले.., आ जी ले ज़रा!!...

कहीं पढ़ा था,
" जीने की राह आसाँ कर ली,
किसी से माफ़ी माँग ली, और
किसी को माफ़ कर दिया!!."
पता नही, ये बातें कब और किस सन्दर्भ में लिखी गयी होंगी !..मैंने कोशिश तो बहुत की , इनमें से किसी भी मतले को अपने आप पर उतारने की.., पर यकीन मानना मेरे दोस्त, कर नही पाया.., या यों कहें कि, शायद करने की पूरी

क़वायद नही हो पायी!..
कभी सोचता हूँ, जब हमारे द्वारा किये गए गलत कार्य या विचारों का दण्ड ईश्वर हमेशा ही देते है, वे तो माफ़ी की गुंजाइश भी नही छोड़ते, तो हम कौन से बड़े तीसमार खां हो गए जो हम माफ़ करना शुरू कर दे.?
जब ईश्वर भी किसी सजा पर हमसे माफ़ी नही मांगते, (उन्हें तो माँगनी भी नही चाहिए (तो हम किसी से माफ़ी की अरदास क्यों करे..?
ईश्वर की सृष्टि में सब कुछ नियत है, बस हम-आप धागे से बँधी कठपुतलियों की तरह भिन्न विचारों को मन में लाते-उतारते रहते है!..
"जाहि बिधि राखे राम, ताहि बिधि रहिये "की तर्ज पर जीवन में घटित हर पल-कुपल का आनन्द लीजिये, और फिर से अगले वर्ष के अन्त में बीते पलों की समीक्षा कीजिये!.
बस अंग्रेजी वर्ष का अन्त दीख रहा है, तो कुछ अपने मन की बातें भी कर ली..
�😊�💐

कटे हथेलियों ने भी बिटिया को बचाने की क़वायद कर रखी है!.
ईश्वर ने तो हमारे पुरे शरीर को ही सकुशल बना भेजा है!..
फिर भी हमारे ही सामने बिटिया की अस्मत और जान ले ली जाती है!..
क्यूँ न हो, आखिर कटी मानसिकता का तो कोई इलाज़ नही न!..

पत्थर की आपबीती💐..
हथौड़े का चोट सह लिया तो, "शंकर.",
चोट से टूट गए, तो रास्ते का" कंकड़!!.."

" बस दो कदम तुम भी चले, एक तो मैं भी चला,
सुर्ख़ गुलाबो की पंखुड़ियाँ भी तो तेरे ही कदमो चली,
क्या हुआ जो, कदम मेरे छूटते गये,
संग तेरे तो यह भी सही-वह भी सही😊😊💐"..
-अरुणोदय

इन पलों का सुकूँ मुझे नवाज़ दे ऐ ज़िन्दगी,
इन पलों ने ही मुझे अपने आप से रूबरू किया है😊💐..
-अरुणोदय

जीवन की आपाधापी में कहीं हम जीना तो नही भूल रहे..? कुछ शब्दों को मैंने पंक्ति-बद्ध किया था, शायद डायरी के किसी पुराने पन्नो पर। प्रगतिमान पत्रिका के सम्पादक चन्दन राज जी को यह पुरानी रचना कुछ ज्यादा ही भा गयी, ऐसा लगता है.., तभी तो पत्रिका के नव-अंक में परोस दिया इस भावुक रचना को !..
आभार, ह्रदय से□😊□💐..

घर की तरफ आते हुए अगर,
कदम तेज़ न हुए,
मिलने की दीवानगी न दीखे,
कुछ और भी याद आ गया हो,
समय बाँचने की जद्दोजहद हो जाए,
तिल–तिल कर मर रहे है।
हर घंटे बच्चो की याद न आये,
हर पल पत्नी की बाते याद न रहे,
बच्चो की शैतानियाँ, प्रेम की अठखेलियाँ,
याद न रहे, न ही याद आने पर मुस्कान हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।
अपने आशियाँ का हर कोना,
ग़र खोने का निमंत्रण न दे,
अपने कमरे में प्रेम की चहक न हो,
रसोई में पडोसी के सब्जी की गमक न हो,
अपने वार्डरोब में रिश्तों के कपड़ो की धमक न हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।
ड्राइंग रूम में चीजे थोड़ी बिखरी हो,
अध्ययन कक्ष में थोड़ा सलीका हो,
छत के गमलो का ख्याल न हो,
खिले फूलो पर ध्यान न हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।
बच्चो के घुटनो की चोट,
पत्नी के बदन से हल्दी की महक,
अपने बटुवे के चिल्लरो की संख्या,
अगर जेहन में न हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।
दोस्तों की बेसमय आवाजाही,
बच्चो का समय से सो जाना,
माँ का अनजाने में कमरे में आना,
अगर जीवन में नही दीख रहा, तो,
तिल-तिल कर मर रहे है।

बारिश की बूँदों ने भिगाया नही,
तेज़ हवाओ ने डराया नही,
कड़ाही के गर्म तेल से हाथ सूजा नही,
पानी की तेज़ी में नहाया नही,
तिल-तिल कर मर रहे है।
अकेले में जोर का हँसना और दौड़ना,
बच्चो के संग भी दौड़ लगाना,
पडोसी के बगिया से कुछ फूल चुराना,
परचून की दूकान से दो लेकर, एक बताना,
अगर कभी नही किया है,
तिल-तिल कर मर रहे है।
कभी किसी गरीब को बिठाया नही,
किसी निर्वस्त्र को पहनाया नही,
भूखे को खिलाया नही,
भटके को पहुँचाया नही,
रोते को खिलखिलाया नही,
दृष्टिहीन को दिखाया नही,
तिल-तिल कर मर रहे है।
किसान को सहलाया नही,
सैनिक को सम्हाला नही,
शिक्षक को समझा नही,
समाज को स्वीकारा नही,
तिल-तिल कर मर रहे है।
बस यही तो जीवन है। तिल-तिल कर और कोई नही मर रहा,
मर तो केवल हम ही रहे है। बड़ी अच्छी कहावत है,
"जा, जी ले अपनी ज़िंदगी😊😊💐..."
-अरूणोदय

चुनर बासन्ती बदन भ्रमित मोरा,
लहक-लहक मोर जीया तन बरसे,
उड़ी-उड़ी नभ में मन-तरु-पल्लव,
उर बंध-कटि बंध भींगही पनारे!..
लरसत घाघरा के बूटी हे पिया मोरे,
तोरे बिन सूना ही पायलिया बजारे,
ज्यों-ज्यों निकट ही आवत हे दिनिया,
मन-चकोर बहक जाये रे पिरितिया!..
बेसुध मनवा, मतंग अरु बदन मोरा,
हर रस भीगे जीया के करेजवा,
चहुँ ओर जय-जय नाचहीं-गावहीं,
पिया तोरे नाम के लिखहुँ परतियाँ!!..
-अरूणोदय

चाँद पड़ा जल के ऊपर,
शीत धीमे-धीमे पिघल रहा,
जल-राशि की महिमा देखे,
पाषाण भी तो डोल रहा!..
चाँद की चँदनिया से चाँदनी भी चिस-चिस कर, चपल चँदोवा से चुम्बन की चिर-प्रतीक्षित चाहत को, चूर-चूर कर अपनी ही चाहत को चिरायु किये जाती है!..
-अरुणोदय

आ बैठ मेरे पास, तुझे सुनाता रहूँ!..
कम्बख़्त एक तो कोई आता नही, दूज़ा ग़र आ भी गया तो, सेल्फ़ी लेकर चलते बना।
तू अच्छा मित्र लगता है, तेरे साथ कुछ अपने सा महसूस भी होता है, और मेरे टाइप का दीखता भी है😊😊..
कुछ रिश्ते भी ऐसे ही होते है, बस किसी ख़ास आयोजन पर ही सेल्फी मोड में निभते दीखते है💐😊..
ज़रा सीने की धड़कन सुना दे मुझे,
जिन धड़कनों ने मेरी धड़कनों से ,
अपनी रवाईयत पायी है!..
-अरूणोदय

माँ के लिए लिखी एक पुरानी कविता को प्रगतिमान में जगह दी है, सम्पादक चन्दन राज जी ने !..आभार पुरे प्रगतिमान का😊💐💐..
" माँ..., उन्नीस तपिश की पीड़ा" !!..

उन्नीस साल हो गए माँ, तुझे देखे हुए!..
तूने तो कहा था, कभी जाऊंगी नही!..
लगता है, कोई बड़ी बात हुई होगी , तेरे जाने में!.
आँसू सूखते नही माँ,
दिल भरता नही, जी लगता नही,
तेरे वज़ूद की खोज किये चलता हूँ।
कैसे कहूँ कि, आज के दिन ही तुम गयी थी,
किसी अन्तहीन यात्रा पर..,
यह कह कर कि, अपना ख्याल रखना!.
तुम्हे कैसे मालुम कि,
हमने भी सीख लिया है, तेरे बगैर ही जी लेना,
अब तो याद भी नही आती, खोजता भी नही तुझे,
बस, एक आदत जाती नही माँ,
तुझे खिलाये बिना, निवाला भी साथ नही देता!..
साँसे भी कह डालती है,
माँ को याद कर लिया कर!..
साँसों को क्या मालूम कि, बिना तेरे तो साँसे भी साँस नही लेती!..
फूल लाता हूँ , रोली चढ़ाता हूँ,
अक्षत और कुमकुम से तुझे सजाता हूँ,
जब अपने आप को ही सजवाना था,
मेरी क्या जरूरत थी, माँ!..
मैं तो तेरी गोद में सोने आया था,
तेरे कंधों पर रोने आया था,
तेरे आँचल में छुपने आया था,
अपने भाग्य को तुझसे चुमवाने आया था, माँ!.
तूने जाते ही बड़ा बना दिया, माँ,
न तो सोता हूँ,
न ही रोता हूँ,
छुपाने को कुछ है नही, तो छुपता भी नही,
चूमने को तेरे दोनों पोते है न, मेरे पास!..
तेरा उड़हुल सूख रहा, माँ,
पानी दिए चलता हूँ,

इस अंगना न सही,
अपने ही अँगने में लगाऊंगा,
उसी फूल से तेरा बाकी श्रृंगार भी करूँगा, माँ!..
हरसिंगार ने भी कहा था, मुझे भी ले चलो,
जहाँ उड़हुल रहे, वही बसा देना,
मंदिरों के पुजारी खोजते होते है,
तेरे हर वजूद को, माँ!!..
आज माँ की पुण्य-तिथि है!!...
कुछ लड़ना भी था, झगड़ना भी था , रोना भी तो था!...
लड़ू भी तो किससे..? कोई चुप भी तो नही कराएगा!...
अपना ख्याल रखना माँ, कुछ कमी अगर दीखे भी तो, नज़रअंदाज़ कर देना
क्योकि, तुम्हारी नाराज़गी और आदर्शों से किसी को फ़र्क़ नही पड़ता, माँ!...
आचमन कर, पुनः खोना चाहता हूँ, तेरे आगोश में, माँ!....
नमस्तुभ्यम् माँ नमस्तुभ्यम्😊💐💐....

मेरे हमसफ़र,
ज़िन्दगी के सफ़र में,
मेरी जिन्दगी तो तुमने सँभाल दी,
आ बैठ,
मैं भी तुझे इस राह पर ही सँभाल लूँ!.
-अरुणोदय

कल शुकर की रात थी, रौशनी मयस्सर थी,
आज हर चिराग रौशनी को मयस्सर है,
बड़े नज़ाकत से जलायी थी, चिरागाँ हमने,
सुबह की बेबसी से रौशनी भी मुतमईन है!...
-अरूणोदय

एकदम टटका-टटकी फोटू लिए है, मित्रो 😊😊.
लोकसभा टीवी पर मेरा इंटरव्यू आ रहा है, अभी😊.
संसद भवन का पिंक रंग और मेरे कुरते का पिंक रंग !..पता नही, कौन ज्यादा खिल रहा है😊😊..
तेरी जुल्फों से जिन पनाहों को लिया करता था,
आज उन्ही जुल्फों ने मेरी हथेलियों पर पनाह मांगी है,
कि, आ भी चल तेरी ज़िस्म की खुश्बुओं ने,
मेरी ही फ़िज़ा में मदमस्त रवानी को छेड़ा है!..
-अरूणोदय

" एक चाँद को इन्तेज़ार, एक चाँद का इन्तेज़ार,
चाँद भी मशरूफ़, अपनी चाँद की चाँदनी में" !..

ऐ बसमतिया,
आप तो आज भी बासमती चावल की तरह ही गमकती है। थोड़ा और करीब तो आइये, हम भी तो जी भर के देखे, अपनी बसमतिया को!..
क्या हुआ जो, चेहरे पर झुर्री आ गयी, दाँत नही रहा, हाथ-पैर ठीक से चलते नही!..
चेहरा, दाँत और हाथ-पैर तो जवानी के दिनों में काम आ ही गए थे, अब तो बस अपनी असल बसमतिया की ही जरूरत है।
अरे, शरीर का सौन्दर्य और उसकी जरूरत तो जवानी के दिनों की ऐसी थाती है जो, धीरे-धीरे स्वतः खत्म हुए जाती है। असल जिन्दगी तो शरीर के शिथिल होने के बाद ही शुरू होती है, जब आत्मा और प्रेम जीवन में रस बहाती है।
जवानी के समय का प्रेम तो जवानी जाने के साथ ही खत्म पर, आत्मा का प्रेम तो हमेशा के लिए।
आपने देखा भी होगा, बचपन का प्रेम भी हमेशा स्थिर ही होता है, क्योकि उस प्रेम में न तो शरीर की जरूरत होती है और न ही सौन्दर्य का!..
सारे फसाद का जड़ ही जवानी है, इसी में प्रेम खत्म हो कर जरूरत की शक्ल अख्तियार कर लेता है।
अब तो बच्चे भी बड़े हो गए, अब तो कभी-कभी आइस-क्रीम खिला दिया कीजिये और गलबहियाँ देने की उम्र कभी खत्म होती है, भला..?
एक बात कहूँ, जब सुबह की चाय लेकर आज भी आती है आप, कसम से , आज भी मन चहक जाता है, आपकी चेहरे की झुर्रियों पर धूप की किरणों को देख कर !.मन तो बावला रहता ही है!..
याद है, परसो गाँव की ठाकुरबारी पर मैंने कौन सा गाना गया था..?
आ, मेरी जौहरे-जबी, तुझे मालुम नही 😊..
बच्चे कितना हँसे थे!..

हे ईश्वर, अगर तुम्हारी थोड़ी भी कृपा मुझ पर हो, बस इतना कर देना कि, इस उम्र में आने पर, हम दोनों पति-पत्नी का फोटो भी ऐसे ही खिंचवा देना!.
अब भी पिया मिलन की आस और मन तो अभी से महो-महो💐😊..
कुछ रंजिश थी बड़े क़वायद से,
दो क़दम साथ क्या हुए, ख़ामोशी फ़ना हो गयी💐😊..
-अरुणोदय

माँ...तुम्हारी दशहरा💐..
बड़ी उम्मीद थी, माँ,
पर इस बार भी कुछ नही ही हुआ,
मुझे याद है,
मुफलिसी के दिनों में भी,
तुम अपनी नयी साड़ी से भी,
हम सबो के लिए कमीज़ बनवाती थी!..
अब तो ईश्वर ने बहुत कुछ दिया माँ,
पर आज भी इन्तेज़ार ही होता है,
दशहरा में तुम्हारे दिए, नये कपड़ो का,
जो सुकूँ तुम्हारे दिए" सस्ते "कपड़ो में था,
खुद से खरीदे" महंगे "ब्रांडेड कपड़ो में नही माँ!.
जो सुकूँ तुम्हारे दोनों पोतों के लिए खरीदने में है,
वह अब अपने लिए खरीदने में कहाँ, माँ!..

आज भी इन्तेज़ार होता है, तुम्हारे जयंत्री का,
अब तो पंडित जी देकर चले जाते है!.
तुम्हारे पूजा के लिए फूलो की चोरी,
आज भी याद है, माँ!..
आज तो पूजा बस हो जाती है, माँ!..
तुम्हारी पूजा की आरती में,
हम घण्टी और शंख बजाते थे माँ,
अब तो हम ही आरती करते है और,
हम ही घण्टी लिए खड़े हो जाते है!..
उड़हुल के फूलों को हमारे सर से छुवाना,
आज भी याद है माँ!..
उड़हुल तो आज भी है,
पर छुवाने के लिए, हम दोनों ही है, माँ!..
रिक्शे पर बिठा कर,
अपने आँचल से हमारे सर को ढकना,
आज भी याद है माँ!..
आज तो बड़ी सी गाडी भी है,
पर जिम्मेदारियों ने मेला-मन्दिर,
घर में ही लगा दिया है, माँ!..
बड़े अपना बड़प्पन भूले,
हम कैसे भूले, माँ!..
तुम्हारे पोतों को हम अपने बड़े होने का,
अहसास दिलाते है, माँ!..
-अरुणोदय

माँ,
दशहरा के हर संकल्प और अक्षत में तुम याद आयी हो। तुम्हे हिचकी तो काफी आयी होगी, क्योकि तुम्हारी याद जो इतनी बार आयी है। तुम्हे देखकर ही तो पूजा-अर्चन का ककहरा भी सीखा, माँ !..जैसे बन पड़ा, हम सबो ने ही माँ भगवती को नमन किया, माँ!.
सबने कहा कि, जयंत्री काफी अच्छी आयी है और हवन भी बढ़िया रहा, फलाफल सुखद है। अपना ख्याल रखना, माँ!..
तेरी चर्चा करने मात्र से ही, मन महो-महो हो जाता है, माँ💐😊...

जिन्दगी कुछ धूप सी,
थोड़ी छाँव सी कभी-कभी,
कभी इस पार स्याह जिन्दगी,
कभी उस पार सफेदी सी!..
किवाड़ के दरकते सिटकिनी से,
कभी जिन्दगी की आवाज़ भी आती है,
स्याह जिन्दगी के इस पार को,
अब तो अपने उजाले में लिए चल!..
चरचराते दरख्तों के टुकड़े से,
एक आशियाँ महफूज़ बना था,
आज चिता भी थोड़ी जिन्दगी,
उन्ही टुकड़ो से उधार माँगती है!..
- अरुणोदय

अरे मुनिया, का हो गया तेरे को..?
कल तो तेरे कमर में बड़ा लोच था !..ऐसा मत करना कि, वर्षो की आस पर पानी फिर जाये और एक धेला भी न मिले !.बड़े साहेब ने अपने खास मुलाज़िम

दरबारी से खबर करवाया है, नाच के लिए !..मैंने तो ढोल को बढ़िया से धूप दीखा कर और सारे रस्सों को दुरुस्त भी कर लिया ताकि, कल कोई भी लोचा नहीं हो !..साहेब के गुस्से को मैंने देखा है !. पिछले बार कलुआ का हरमुनिया थोड़ा सा बेसुरा क्या हुआ, उसी हरमुनिया को गले में बँधवा कर, पुरे गाँव का चक्कर लगवा दिया था।

देख, कमर में दरद उखड़ गया हो, बसमतिया को बुला कर थोड़ा मालिश करवा लो, उनके सामने कोई बहाना नही चलेगा। एक बात और, अगर मेरा ढोल और तुम्हारी कमर के जलवे ने साहेब का मिज़ाज़ बना दिया तो, गाँव के उत्तर में जो कुआँ है, उसी के पास घर बनाने को थोड़ी जमीन भी मिल जायेगी और खेती करने को थोड़ी और जगह !..फिर तो, हमरे बच्चे भी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ कर गिटिर-पिटिर करेंगे और हम दोनों हँसते रहेंगे, क्योकि बच्चो की बात तो हम समझेंगे नही!..

ठाकुर बाबा की किरपा रही तो, अगले साल खेती की पहली कमाई से तुम्हारे लिए, चाँदी का एक छल्ला भी पक्का रहा !.छन-छन करती घर में घूमना और मैं जब काम से वापस आऊँ, गलबहियाँ दे कर, मेरा स्वागत करना!..

बस इत्ता सा ख्याल रखना, जब मैं घर पर नही रहूँ, दरबार के किसी मुलाज़िम से अकेले कोई बात नही करना या घर पर मत आने देना !..मैंने देखा है, जब तू नाचती है ना, कुछ लोगो की नज़रें तेरे नाच पर नही, बदन के उभारो पर होती है।

ठाकुर बाबा से हमेशा एक ही प्रार्थना करना, हमारे बच्चो को इस ढोलक और नाच की दुनिया से दूर ही रखे !..छोटा ही सही, कोई शहरुआ काम दिला दे!.. तेरी चुनरी भी तो पुरानी हो गयी है, और देख न, मेरी पगड़ी भी कई जगहों से फट गई है !.आज अगर साहिबाइन भी आ गयी तो, तेरे लिए चुनरी और अपने लिए पगड़ी तो इनाम में दरख्वास्त कर ही लूँगा, सुना है, बड़े दिलवाली है!..

चल, अब घर चल !.जल्दी से बसमतिया को बुला कर, तैयार हो जा!..आज की रात जमा देना है, तेरी लोच और मेरी थाप से अपने जीवन को सँवार लेना है !. फिर तो हम दोनों का मन महो-महो😊😊..

-अरूणोदय

" माँ..., उन्नीस तपिश की पीड़ा" !!..
उन्नीस साल हो गए माँ, तुझे देखे हुए!..
तूने तो कहा था, कभी जाऊंगी नही!..
लगता है, कोई बड़ी बात हुई होगी , तेरे जाने में!.
आँसू सूखते नही माँ,
दिल भरता नही, जी लगता नही,
तेरे वज़ूद की खोज किये चलता हूँ।

कैसे कहूँ कि, आज के दिन ही तुम गयी थी,
किसी अन्तहीन यात्रा पर..,
यह कह कर कि, अपना ख्याल रखना!.
तुम्हे कैसे मालुम कि,
हमने भी सीख लिया है, तेरे बगैर ही जी लेना,
अब तो याद भी नही आती, खोजता भी नही तुझे,
बस, एक आदत जाती नही माँ,
तुझे खिलाये बिना, निवाला भी साथ नही देता!..
साँसे भी कह डालती है,
माँ को याद कर लिया कर!..
साँसों को क्या मालूम कि, बिना तेरे तो साँसे भी साँस नही लेती!..
फूल लाता हूँ , रोली चढ़ाता हूँ,
अक्षत और कुमकुम से तुझे सजाता हूँ,
जब अपने आप को ही सजवाना था,
मेरी क्या जरूरत थी, माँ!..
मैं तो तेरी गोद में सोने आया था,
तेरे कंधों पर रोने आया था,
तेरे आँचल में छुपने आया था,
अपने भाग्य को तुझसे चुमवाने आया था, माँ!.
तूने जाते ही बड़ा बना दिया, माँ,
न तो सोता हूँ,
न ही रोता हूँ,
छुपाने को कुछ है नही, तो छुपता भी नही,
चूमने को तेरे दोनों पोते है न, मेरे पास!..
तेरा उड़हुल सूख रहा, माँ,
पानी दिए चलता हूँ,
इस अंगना न सही,
अपने ही अँगने में लगाऊंगा,
उसी फूल से तेरा बाकी श्रृंगार भी करूँगा, माँ!..
हरसिंगार ने भी कहा था, मुझे भी ले चलो,
जहाँ उड़हुल रहे, वही बसा देना,

मंदिरों के पुजारी खोजते होते है,
तेरे हर वज़ूद को, माँ!!..
आज माँ की पुण्य-तिथि है!!...
कुछ लड़ना भी था, झगड़ना भी था , रोना भी तो था...!
लड़ू भी तो किससे..? कोई चुप भी तो नही कराएगा...!
अपना ख्याल रखना माँ, कुछ कमी अगर दीखे भी तो, नज़रअंदाज़ कर देना
क्योकि, तुम्हारी नाराज़गी और आदर्शों से किसी को फ़र्क़ नही पड़ता, माँ!...
आचमन कर, पुनः खोना चाहता हूँ, तेरे आगोश में, माँ!....
नमस्तुभ्यम् माँ नमस्तुभ्यम्😊🥀🥀....

थापम तालम् , लयनम् मधुरम्,
हृदयम् प्रेमम् , जीवनम् कालम्,
अविरल सुमधुर कनकत खनकत,
मन-पिपासु डमकत शुलम्!..
लटकत जुल्फी अधरम् बदनम्,
कमनी काया लरजत लोलुपम्,
पिया मिलनम् ललितम् थापम्,
सुमधुर बदनम् , सुमधुर बदनम्🥀😊..
-डॉ.अरुणोदय

नीली-पीली राहों से,
तय हुआ,
अब तक का सफर!.
स्याह-हरित का मंजर है बाकी,
शीत की आहट है, मेरे हमसफ़र!..
-अरुणोदय

क्षमा सहित, इसमें मेरी कोई गलती नही, बस प्रतीक है.., पत्रकारिता से जुड़े हुए घनिष्ठ मित्रो के स्नेह-सिंचन का!..
आभार, स्नेह बना रहे..मन तो भोरवे से महो-महो💐?😊..

इक कतरा भर चाहिए, मुझे.,
तुम्हारी बड़ी से झोली से,
कितनी खुशियों को तुमने,
बस बाँध रखा है,
बाँट डाल आज ही,
किसी के मुस्कान पर,
नसीब वाले हो कि,
तुम्हे कोई हँसता हुआ आज मिला!..
-डॉ.अरुणोदय

उत्तुंग शिखर हो चला मुखर,
पास मधुरिमा चाँद प्रखर,
हिम-शीत गले जब आये अनल,
चुम्बन की आस राहे-सहर!..

-डॉ.अरूणोदय

तुम्हे क्यों लगता है,
कतरा-ऐ -गुबार भी मेरा नही..?
सारा जहाँ तो तेरे ही पास है,
क्या धूप-धूप भी मयस्सर नही..?
-डॉ.अरूणोदय

रेल की वापसी

भींगी हुई रेल की पटरियों सी,
मेरी भी आँखें नम होती है,
फ़र्क़ बस इतना सा रह जाता है कि,
रेल की रफ्तार से पटरियाँ सूख जाती है।
हर दिन मैं भी आता हूँ,
रेल भी रोज़ ही आती है,
रेल को मुसाफ़िर और मुसाफ़िर को रेल,
तो रोज़ ही मिलते है,पर
मुझे वह नही दीखता, जिसके लिए मैं रोज़ आता हूँ।
जाते वक्त गले भी लगा और पाँव भी छुए थे उसने,
कहा था, पापा अगले सावन ही आउँगा,

यहाँ तो नौ भादो भी बीत गए,
उसके इंतज़ार में धान की रोपनी भी छूट गयी।
रेल की चाय की तरह हर शख्स लगता है कि,
वह आ गया,
पास आते ही चाय के बेस्वाद की तरह अपना सा नही लगता,
मन मारकर कभी उसी बेस्वादु चाय से जी बहलाता हूँ।
मुसाफ़िर भी आते-जाते थक गए होंगे,
यह डूबता शख्स किसके इंतज़ार में,
क्या पता उन्हें कि,
मैं किसी के नही, अपने के इंतज़ार में हूँ।
रेल की गति की तरह समय भी साथ छोड़ दे रहा,
समय को तो अगली मंज़िल भी नसीब,
मुझ अभागे को न तो रेल और न ही ,
समय की मंज़िल ही नसीब।
इसी उम्मीद में रेल को देखता हूँ,
कभी तो उन्ही पटरियों पर फिर आएगी,
आज इधर से उधर जा रही तो,
कभी तो उधर से इधर भी आएगी!..
डॉ.अरूणोदय

रे मन,
बड़ा चंचल तू,
बड़ा निष्ठुर तू,
ऊपर आसमाँ मेरी जद में,
नीचे मैं धरा की गोद में,
हवा भी कुछ कहे,
सरर-सरर,
बुँदे भी आँख मिचमिचाये,
मैं भला ठहरा सा पल,
रे मन,
कभी तो सुन,
मेरी बाताँ ज़रा,
ये बचपना न जाने कब,
ओझल हो जाये,
मेरी जुस्तज़ू से,
रे मन,
कभी तो सुन , मन की ज़रा!!...
-डॉ.अरूणोदय

इस क़दर समा जाती हो,
मुझे आहट भी नही होती,
तेरे आवरण का चुम्बित अहसास सा,
रगों को कुछ सहमा सा देता है,
तेरी धुरी भी तो मेरे पास ही,
न जाने क्यों, मैं कहाँ रहता हूँ...?
गीली लकड़ी की टूटी बेंच,
पीछे पत्ते भी ठिठोली करते हुए,
कुछ पत्तो ने तो घुसपैठ भी कर ली,
कुछ ने तो रंग भी बदल डाले,
कुछ तो सूख कर गिर पड़ी,
और देखो, हम अलग-विलग होकर भी,
समाये हुए से!..
-डॉ.अरूणोदय

राष्ट्र में युवत्व और युवत्व में राष्ट्रवाद!!..
बस यही कुँजी मिली है , जीवन को सार्थकता से साक्षी बनाने का!..
इस मंत्र को समझ कर तो मन महो-महो..

कभी तो आओ इन लहरों के किनारे,
तुम्हारी और मेरी प्रेम की कहानी कहती है, ये लहरे,
कभी सोचा तुमने, ये पत्थर आये कहाँ से..?
याद करना, ये वही पत्थर है, जिन्हें,
मैंने और तुमने मौन स्वर में कंकड़ रूप में फेंका था.!
देखो न, ये पत्थर भी अब बड़े हो गए, तेरे इंतज़ार में,
बड़े आड़े-तिरछे भी पड़े है , तेरी उम्मीद में कि,
तू आएगी और इन्हें सहेज कर सजायेगी,
तू है कि, न मेरी सुनती है, न इनकी ही सुधि है.!
देख, अब देर न कर,
कही ऐसा न हो कि,
पत्थर भी पिघल पड़े,
मेरी छोड़, अपनी सोच..,
ग़र तू कभी फिर आएगी किसी और के साथ,
सोचा है, किसकी ओट में प्रेम-लिप्सा लिखेगी..?
-डॉ.अरूणोदय

मूक प्रेम की व्यथा,
तुम क्या जानो, हे मानव.!
तू तो कुछ भी कर गुजरता है,
अपने झूठे प्रेम की खातिर.!
सारी क़ायनात उठा लेते हो,
अपने प्रेम के पागलपन में,
जरा यह भी तो सोच, कि,
हमारी क्या ख़ता है..?
दिल तो हमारे भी धड़कते है,
प्रेम तो हम भी करते है,
चुम्बन मेरे हिस्से भी आता है, और
प्रेम-किलोल भी तो हम करते है..!

फ़र्क़ इतना ही समझ आता है,
तुम मानव जब जी आये, अपनी कर लेते हो,
हमारे बीच या तो दीवार खींच देते हो, या फिर,
गले में जंजीर डाल मौन करवा देते हो..!
जितना तेरे हिस्से का प्रेम बचता हो,
उतना ही दे दे, हमे,
उसी से जी लेंगे,
अपने प्रेम से मिल लेंगे..!
-डॉ.अरूणोदय

अपना अक्श दर-बदर ढूँढता रहा, ऐ रहगुज़र..,
कभी पास तो कभी दुरंदेज़ ही दिखा,
हमेशा चिरागाँ की लौ ने छिपाया हमें,
जो हम छिपे तो, जुस्तज़ू की रोशनी में..!
बदन-करीब ही छुआ ऐ सितमगर..,
नज़रों ने ही इश्तकबाल किया,
ग़ौर फ़रमाया तो, नोश की रहनुमाई,
जुनूँ की हद तक पेशानियों की तह आयी..!
-डॉ.अरूणोदय

(भाव में समानता पर, व्यक्तित्व में बदलाव)

जिन राहों पर तूने कभी सज़दा किया,
अब वे राहे ही मेरी मंज़िल है..,
हशरते आज भी उन्हें चूमने की है,
ज़मी पर उतरे हुए सितारों को..!!
-डॉ. अरूणोदय

हे प्राणप्रिय, हे प्रितम!..
तुम्हारी मिट्टी, मेरी मेहनत..,
तुम्हारा त्याग, मेरा कौशल..,
मेरा प्रहार, तेरी सहनशीलता,
मेरा कटुपन, तेरा सौन्दर्य. . ,
काश, कि एक फूल खिला पाते. . !,
-डॉ.अरूणोदय

क्या सोच रहे है..?
अभी भी सोच ही रहे है..?
अब भी कुछ नही बिगड़ा, मित्र!..
सावन की बारिश भी गति में ही है!..
न जाने, कब तक भिंगोयेगी..?
आपके आस-पड़ोस में पानी जमा ही होगा..!
वह भी जल्द ही गटर में जा बहेगा..!
बच्चे भी तो होंगे, आपके आस-पास..!
सबने उन्हें रोका भी होगा, पानी में खेलने को..!
मौका है, दस्तूर है!..
पुराने पुस्तको से कुछ पन्नो को निकाल,
बच्चो को बुला, और बना ले अपने सपनो की नाव!..

छोड़ दे, पानी में अपने जहाज़ को बहने को!..
मंज़िल भी तेरी होगी, कारवाँ भी तेरा होगा!..
-डॉ.अरूणोदय

बड़े शौक-ऐ-शवाब से निकला ऐ रह-गुज़र,
रस्तों से बेफ़िक्री भी न देखी गयी मेरी,
कहते तो थे कि, आ नाप मुझे,
पास आकर दस्तूरी भी न मिली!..
कशमकश है , तेरी ही जुस्तज़ू में,
ख्वाब भी कभी आये तो सही,
रस्तों को नापने की क़वायद भी,
तेरी चाहत-ऐ-दस्तूर से भी वाकिफ़ रही!..
-डॉ.अरूणोदय
(टैलिन के गलियारों में)😊..

मैं तो जी चूका अपनी बड़ी जिन्दगी,
बस तुझे देखना है, जीते हुए बड़ी जिन्दगी,
मेरी चिन्ता तू अभी तो न कर, मेरे दोस्त,
बारिश के चोटों से अभी तुझे बचाना है।
ये बुँदे लगती तो बड़े जोर से है,
चमड़ी भी तो मोटी हुई मेरी ही है,
तूने तो अभी कुछ ही सावन देखे है,
असाढ़ का क्या, भादो भी तो बाकी ही है।
रंज ना कर तू, मेरे भींगने पर,
बूँदों की आड़े-तिरछे चोटों पर,
हो सके तो, अगली बार आ ही जाना,
जब मैं भींगू, तू मुझे बचा लेना।
-डॉ .अरूणोदय

हुलेले-हुलेले.., हुर्र-हुर्र.., हुलेले-हुलेले!!...
रे गुलटनवा, जल्दी आ रे, भन्टुआ के भी बोला लो। आ धरीछन काका के पोता के भी जल्दी बोलाओ। ई चन्दूआ कहाँ मर गिया रे..?
भाई, आज ऊ सहरुआ बच्चा लोगन को दीखा देना है कि, कपडा भले ही हमनी फाटल पहनते है, लेकिन कपडा के पीछे जे दिल है, ऊ सबसे बड़ा है। हमनी के चेहरा भले ही करिया रंग से पोतल है, तनी सा पानी मार के धो दिए न, चमक देख के ऊ सब सहरुआ बचवन घबरा जायेगा।
आयँ रे भाई,
हमरे से नस्ता पूछ रहा था !..ओकरा मालुम नही कि, हमरी मैय्या कल रात को

हमरे लिए मकई के उबाल के बनायी थी, ऊहे बचा हुआ न आज भोरवे ही खाये है। इत्ता बढ़िया था!..
दूगो अंग्रेजी का गिटिर-पिटिर सीख के, धौंस जमाता है.., हमरे माट साब का एगो अंग्रेजी नै बुझायेगा, उन लोगो को!..
चल रे, पूछते है उनलोगों से कि,
भैंस दुहने आता है..? गाय-भैंस का चारा लगाने आता है..? हल का जुआ बैल पर लगाने तो नहिये आता होगा..?
आ चला है, हमनी से बराबरी करने, हुँह!!..
अंग्रेजी- फ़ारसी नही बोलेंगे तो क्या बिगड़ेगा रे, भाई..? अगर हमलोगो वाला काम नहीं आएगा तो, खायेगा कहाँ से..?
थक-हार के तो, हमरी मैय्या-बापू के सरन में ही आना होगा!..
सहरुआ बचवन सब , दिन भर किसिम-किसिम का बैटरी वाला खिलौना और मोबाइले में ओझराएल रहता है, तबहियो बकलोल सब बोलेगा कि, बोर हो रहा हूँ!..
अरे, भैय्यारी !.. हमनी के गाँव वाला मेला हर साल दसहरा में लगता है, बड़का-बड़का झूला-घनचक्कर-चकरघिन्नी सब आता है। हमनी साल के एगो मेला के इंतज़ार में पूरा साल कमाते है, खाते है आ तोहनी सबसे ज्यादा खुश भी रहते है!..
बाबू एगो नीया बुश्शर्ट खरीद भी देते है। रामलीला में ऊहे पेहेन के जाते है। हनुमान जी से एगो फूल मांग के, जेब में भी रख लेते है। मईया कहती है, ई फूल के आसिरबाद से साल भर ठीक रहता है।
जा बाबू, आपन घर जाओ। खबरदार जो,हमनी के एरिया में आके हमनी को चैलेंज किये!..
चल रे, दोस्त !..अब टेम हो गिया है, भैंस के दुहना भी है आ, बाबु भी हल लेके आ गए होंगे.., बैल को पानी भी लगाना है!..
आ याद रहे, रतिया को भगजोगनी को पकड़ने भी चलना है !..आयँ रे, फूलमतिया बहिन ससुरार से आयी है, उहाँ भी तो मिले जाना है!..
देहात के मनोभावों को जीने में तो मेरे लिए पूर्णतः" स्वान्तः सुखाय ..."और इन पावस बच्चो की बात पर तो मन का महो-महो होना तय.

हाँ,
मैं किसी की माँ हूँ,
किसी की पत्नी भी हूँ,
एक बुजुर्ग की बहू भी तो हूँ,
साथ ही एक भाई की बहन भी तो हूँ, ही।
एक संस्कार, एक परम्परा,
एक विचार, एक प्रयास,
एक मानसिकता, एक नज़र,
एक सुरक्षा , एक प्रतिवद्धता,
एक डर, एक निर्भीकता,
यही सब तो पहचान है, ना मेरी..?
कभी तो सोचा होता,
अगली बार कही मैं ही तुम्हारी माँ बन के आऊँ,
कही तुम्हारी पत्नी बन के ही न आ जाऊँ,
कही तुम्हारी बहू रूप में आ गयी तो,
तुम्हारी बहन बन के ही आ जाऊँ..?
कुछ सोच तो नही, रहे.. ?
क्या लगता है, कुछ छूट सा तो नही रहा..?
कोई रिश्ता टूट तो नही गया..?
ऊपर के सारे रिश्ते तो चाहिए, ही.., मुझे मालूम है।
फिर, मेरे बेटी रूप से क्यूँ नफ़रत करते हो..?
कोख में ही क्यूँ मार देते हो..?
ईश्वर का दिया जीवन , मुझे देखने भी नही देते!..
क्यूँ डरते हो..?
थोड़ा खाऊँगी, ज्यादा बचाऊंगी,

तुम्हे कोई दिक्कत भी नही दूँगी,
ससुराल भी बसाऊंगी, मायके की दुआ भी करुँगी।
सारे अरमान भाई- बाप के,
माँ के श्रृंगार का सहारा भी मैं,
घर के यज्ञ की जिम्मेदारी भी मेरी,
अब तो मान जाओ!..
मैं अब भी एक कोख के इंतज़ार में हूँ,
वचन दो, तभी तो आऊँ!.
याद रखना,
अगर मैं आज नही आ सकी, तो,
कल तुम भी नही आ सकोगे!..
-डॉ.अरूणोदय

घर की तरफ आते हुए अगर,
कदम तेज़ न हुए,
मिलने की दीवानगी न दीखे,
कुछ और भी याद आ गया हो,
समय बाँचने की जद्दोजहद हो जाए,
तिल-तिल कर मर रहे है।

हर घंटे बच्चो की याद न आये,
हर पल पत्नी की बाते याद न रहे,
बच्चो की शैतानियाँ, प्रेम की अठखेलियाँ,
याद न रहे, न ही याद आने पर मुस्कान हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।
अपने आशियाँ का हर कोना,
ग़र खोने का निमंत्रण न दे,
अपने कमरे में प्रेम की चहक न हो,
रसोई में पडोसी के सब्जी की गमक न हो,
अपने वार्डरोब में रिश्तों के कपड़ो की धमक न हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।
ड्राइंग रूम में चीजे थोड़ी बिखरी हो,
अध्ययन कक्ष में थोड़ा सलीका हो,
छत के गमलो का ख्याल न हो,
खिले फूलो पर ध्यान न हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।
बच्चो के घुटनो की चोट,
पत्नी के बदन से हल्दी की महक,
अपने बटुवे के चिल्लरो की संख्या,
अगर जेहन में न हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।
दोस्तों की बेसमय आवाजाही,
बच्चो का समय से सो जाना,
माँ का अनजाने में कमरे में आना,
अगर जीवन में नही दीख रहा, तो,
तिल-तिल कर मर रहे है।
बारिश की बूँदों ने भिगाया नही,
तेज़ हवाओ ने डराया नही,
कड़ाही के गर्म तेल से हाथ सूजा नही,
पानी की तेज़ी में नहाया नही,
तिल-तिल कर मर रहे है।

अकेले में जोर का हँसना और दौड़ना,
बच्चो के संग भी दौड़ लगाना,
पडोसी के बगिया से कुछ फूल चुराना,
परचून की दूकान से दो लेकर, एक बताना,
अगर कभी नही किया है,
तिल-तिल कर मर रहे है।
कभी किसी गरीब को बिठाया नही,
किसी निर्वस्त्र को पहनाया नही,
भूखे को खिलाया नही,
भटके को पहुँचाया नही,
रोते को खिलखिलाया नही,
दृष्टिहीन को दिखाया नही,
तिल-तिल कर मर रहे है।
किसान को सहलाया नही,
सैनिक को सम्हाला नही,
शिक्षक को समझा नही,
समाज को स्वीकारा नही,
तिल-तिल कर मर रहे है।
बस यही तो जीवन है। तिल-तिल कर और कोई नही मर रहा,
मर तो केवल हम ही रहे है। बड़ी अच्छी कहावत है,
"जा, जी ले अपनी ज़िंदगी😊😊💐..."
-डॉ .अरूणोदय

कि तेरे एक पग कही तो पहुचेंगे,
जमाने ने भी तुझसे ख़ता जो की है,
मत रुकना राह में आये , हर बाधा से,
वे पत्थर भी तेरी मंज़िल की सीढीयाँ बन जायेंगे,
चाहे तो उफान मारता समन्दर हो,
या हो सायं-सायं करता वनों का झुरमुट,
फिर भी रेत के समन्दर से जज़्बा लेते आना,
क्योंकि वे ही तेरे निशाँ को तेरे पीछे सहेजते है,
हवा के झोंकों ने मस्त समाँ जो बाँधा है,
उसी सरसराहट में तेरी ख़ुश्बू भी बहकी आयी है,
मेरी नसों को अपनी आगोश में लेती रही है, तेरी ख़ुश्बू,
बस एक यही जुस्तजु तो तेरी यादो के साथ मेरी थाती है💐...
-डॉ.अरूणोदय

माँ,
तुम्हारा जन्मदिन है , कैसे कहुँ कि तुम नही हो !..जो नही होते, उनका अहसास भी तो नही होता। जब मेरा जीवन तुम्हारे अहसास से भरा पड़ा है, कैसे कह दूँ कि, तुम नही हो माँ !..मेरे साँस की हर बयार और हर निवाले में तुम हो माँ!..
हर पल दीखती हो माँ,
हर बयार में महकती हो माँ,

तुम्हारे पौधे आज वृक्ष हो गए,
कभी तो छाया में बैठो न माँ!!..
एक बात पूछूँ..? क्या तुम्हे ऐसा नही लगता कि, तुम थोड़ी जल्दी में चले गए !..
मुझे मालूम है, तुम्हे भी जाने की जल्दी नही होगी। पर शायद, किसी बड़े
सौभाग्य को हम तक भेजने के लिए तुम्हे जाना पड़ा होगा। ईश्वर भी तो सौदागर
है, कुछ लेकर ही तो कुछ देता भी है!..
यह बात अब मेरे समझ मे आने लगी है।
कभी सोचा भी नही कि, माँ के बिना भी कोई जिन्दगी भला हो सकती है..?
अब महसूसता ही हूँ कि, माँ के बिना ही" जिन्दगी "हो सकती है !..क्योंकि माँ
के साथ तो" जीवन "होता है, जिन्दगी नही!.,
बड़ा फ़र्क़ है, जीवन और जिन्दगी में, माँ!..
जीवन तो" भरा "ही होता है, और जिन्दगी तो" खालीपन "में भी गुज़र ही जाती
है, माँ💐..
तुम्हे क्या लगा था कि, तू चली जायेगी तो , जिन्दगी स्वतः जीवन बन जायेगा..?
नहीं माँ, नहीं.., जिन्दगी तो आज भी है, तुम्हारे तस्वीरों में जीवन आज भी खोज
किये चलता हूँ, माँ💐.
किसी ने कहा था,
तुम होती तो ऐसा होता, तुम होती तो वैसा होता!..
मैं कहता हूँ,
तुम होती तो ऐसा नही होता, तुम होती तो वैसा नही होता!..
तुम्हारे लगाये बगिया के फूल भी पुकारते है, तुम्हे।
खोजते है, तुम्हे।
अब तो कुम्हलाने भी लगे है।
शब्द टूट रहे है, माँ!..
भावनाएँ बिलख रही है, माँ!..
मन ओझल सा लगता है, माँ!..
तुम बिन बिखर चूका हूँ, माँ!..
जहाँ भी हो, अपना ख्याल रखना।
तुम्हारी बहु और दोनों पोते भी तुम्हे प्रणाम भेज रहे है!!..
नमन, माँ नमन🎂🎂💐💐...
-अरूणोदय

" कैलाश-अरुण"
कैलाश भरा हिम से ऊपर,
हिम भीतर-भीतर खौल रहा,
चट्टानों का पिघला लावा,
ब्रह्म अरुण को लील रहा,
कैलाश-वास न दीखे सकल,
हिम अरुणाई में डूब चला,
जब पास अरुण आये तत्पर,
हिम पिघला जीवन मचल उठा,
पिघलन हो लावा तपिश उमस,
स्याह किरण से अरुण चला,
चट्टानों की तपिश लालिमा,
कैलाश-शिखर की हिम अरुण,
ज्यों-ज्यों किरण हिम सकल हुआ,
कैलाश वास् परिपूर्ण लगा।
डॉ.अरुणोदय

" बस, एक निवाला : माँ के हाथो का"
आज भी ढूँढता हूँ,
लोहे की तवे की रोटियाँ,
मिट्टी के चूल्हे की वो महक,
लकड़ी के आग की वह तपिश,
गाय के गोबर से चूल्हे की एक परत,
माँ के हाथों से छिटकी हुई आटे की एक मुट्ठी,
सब कुछ मिल कर तो बनता था,
परिवार के पेट भरने की एक जुगत,
माँ के हाथ के फफोलो को कभी देखा नही,
खाते वक़्त जरा सी देर पर उठने से पहले सोचा नही,
बचे खाना को नही छोड़ने की बात मानी नही,
माँ के हिस्से की रोटी बची भी है या नही, देखा नही,
आज बड़ा हो गया हूँ, माँ,
जैसे खिला कर तुमने हमे बड़ा किया माँ,
वैसे ही मेरे बच्चों को भी बड़ा कर दो न माँ,
बच्चे आज भी तुम्हे देखते है तस्वीरो में,
कभी तो उनकी मुराद भी पूरी कर दो न माँ,
तुम्हारे हाथ के एक निवाले से मन भरता था माँ,
आज तो पूरी थाल भी भूखी रखती है माँ,
अपनी हाथो के हरी चूड़ियों से,
एक चूड़ी मेरी पत्नी को भी दे दो न माँ,
तुम्हे अभी तो रहना था, अभी ही तो जीना था,

तुम्हे नही लगता, तुम जल्दी चली गयी न माँ..?
जितने फूल तुमने लगाये थे,
अभी तो उन्हें खिलते देखना था न माँ,
जितनी फिज़ाओ को तुमने सँवारा था,
अभी तो उनमे उड़ना था न माँ,
बस रोटी खाते वक़्त ही नही,
हर पल में समायी हुई हो माँ।
डॉ .अरूणोदय

तू भी अकेली,
मैं भी अकेला।
तुम्हे क्या लगा था कि,
आज भी तुझे बच्चे यूँ ही खोजेंगे..?
तेरे पीछे-पीछे यूँ ही दौड़ेंगे..?

तू भी इठलाती-बलखाती,
खेतो में, मेड़ो पर, झाड़ियो के झुरमुट में,
फूस की फुनगी पर, ढेकी के ढकनों पर,
हुक्के के चिलम और कजरे के डीब्बि पर,
मटकेगी और शहरी बच्चे तेरे पीछे ही दौड़ेंगे..?
अरे, गँवईं बच्चे भी तेरे पीछे नही दौड़ते अब।
तू इतना भी नही समझती,
तूने खुद को उजियार किया हुआ है,
इसी में खुश क्यूँ नही रहती.?
खुद को जला कर, अपनी तपिश से उजियार कर के,
किन राहों को बताना चाहती है.?
उन राहों पर न तो राही रहे, न ही पथिक।
न ही बच्चों में वे शरारते रही,
न ही अधनंगे भागने की जुगत।
अब तो तू भी शहरी हो गयी,
दीखती भी नही, मेरे सुने झोपड़े में।
दीया आज भी जलाता हूँ, किसी पथिक की राह में।
आ गयी न मेरे पास, पुनः दीये की लौ में ही।
मैं जहाँ था, वही हूँ,
आ बैठ मेरे पास, तुझे देखता ही रहूँ।
हाँ, मुझमे समाने की जिद मत करना,
कोई शहरी लॉट दीखे,
उड़ जाना फिर बलखाती हुई।
डॉ .अरूणोदय.

वेदना की अगणित किरणें,
साँझ ढ़ले इस सुने घर में,
हर कोने को दमकाती हुई,
हर दीये को बुझाती हुई।
दिए से जगमग घर मेरा सारा,
नन्ही किलकारी को ढूँढता मन मारा,
फिर से किरणों की स्याह छाया ने,
लगा ढक दिया जीवन हमारा।
रोशनी को खोजती खिड़कियाँ हमारी,
थोड़ी सी उधार की रोशनी रोशनदान से,
बड़े कुनबे में बंटे भी कैसे..,
थोड़ी सी हम या थोड़ी सी उनकी दे दे..?
माँ ने कच्चे घर में,
एक अलना बनाया था,
साँझ ढलते ही एक टिमटिमाता सा,
दीया रखा जाता था।
बड़ी रोशनी थी, बड़ी बरक्कत थी,
घर में शान्ति थी, समृद्धि थी।
अब तो बड़ा वाला बल्ब भी है,
स्याह पसरा होता है,
उस बल्ब के गहरे उजियारे में।

पहले स्याह रोशनी में हम उजियार थे,
अब उजियार रोशनी में ,
हम क्या, सारे रिश्ते भी स्याह हो चले।
मिटटी के चूल्हे पर, कच्ची रोटियां नही सिकती अब,
स्टोव-बर्नर ने ममता को ही सेंक दिया।
माँ के हाथो में छाले नही पड़ते अब,
रिश्तों की चिमटियों ने खाने का स्वाद ही बिगाड़ दिया।
अब क्या जीवन खोजे, रिश्तों में,
रिश्तों ने जीव को ही बिसार दिया।
याद आती है, माँ की घुड़की.,
नही रहूँगी तो समझ आएगा, तुम्हे।
हां माँ, अब सब समझता हूँ,
फिर भी नासमझ बन, दुसरो के साये से डरता हूँ।
"स्वान्तः सुखाय "की भावनाओ से स्नेह-सिक्त💐.
- डॉ .अरूणोदय.

माँ, कहाँ हो..?
बहुत मुश्किल है, माँ.., तुम्हे आज के दिन याद करना।
सुबह की पहली साँस भी तुम्ही से शुरू होती है, रात की अन्तिम साँस भी तुम्हे ही सोच कर सोता हूँ। जब सोया होता हूँ, तुम तो और पास ही रहती हो, माँ।

इधर अपराध-बोध कुछ ज्यादा हो गया है, माँ। तुम जिस स्नेह-सम्मान की हकदार थी, हम ज्यादा कुछ कर नही पाये, माँ।
धारण करने के नौ माह तक, हमे अपने रक्त से सींचती रही, तुम। हमने तो तुम्हे नौ दिन होते ही भुला दिया, माँ।
जिस संस्कार को तुमने उतारा, हम सबों में.., हमने उसे ही कही और उतार दिया, माँ।
अच्छा होता, मैं समझदार नही होता., कम से कम तुम्हारे पुनः आने की बाट तो जोहता, माँ।
तुम्हारे लगाये बगिया के फूल भी सूख चले, कुछ तो जतन करो न, माँ।
सोचा था, तुम्हारा बेटा हूँ.., अधिकार याद रहा, कर्तव्य भूल गया, माँ।
जितनी थपेड़ो से तुमने बचाया हमे, हमने तो तुम्हे ही उजाड़ दिया माँ।
कही ऐसा तो नही , तुम्हे लग गया, माँ..,कि तुम्हारे होने में ही खटका है.?
तुम्हारे जाते ही, हम बड़े हो गए, माँ।
बड़ा कभी नही होना चाहा, माँ.., बस तुम्हारे जाने के बाद , गोद की चाहत ने बड़ा कर दिया, माँ।
दोनों पोते तुम्हे देखते है, तस्वीरो में।
खुद तो समझता नही, उन्हें क्या समझाऊँ..?
इतनी जल्दी भी भला कोई जाता है, दोनों कहते भी है, माँ। तुम्हारी लिखी हुई चिट्ठियाँ भी दिखाई है, मैंने उन्हें।
तुझसे सुन्दर तो आज भी कोई नही माँ।
माँ, एक बात पूछूँ.? कहीं तुम्हे अहसास तो नही हो गया था, अपने जाने का..? क्योकि गर्मी की भरी दोपहर में मुझे बुलाकर, अपने साथ फोटो खिंचवाना..? मैं समझ नही पाया था। तुम्हारे जाने के कुछ पहले की, यही तस्वीर बस गयी है, माँ।
सबने कहा कि, आज" मदर्स डे "है, मेरे लिए तो कोई भी दिन बिना माँ के हो ही नही सकता। मेरे भोजन के हर निवाले में हो, तुम।तुम्हारे जाने के बाद, लड़खड़ाया तो बहुत, पर तुम्हारे विश्वास ने स्थिर कर दिया, माँ। कभी याद करना, कोई गलती हो मेरी अगर, अब तो माफ़ कर दे न माँ।
हर पल साथ है तेरा, जीवन की साँसों में,
रहो न रहो, तुम सामने मेरी आँखों के,
अगणित साँसे दी है तुमने मुझे,
हर साँस की कसक में, बचा है अक्स तेरा💐..

यहाँ गर्मियाँ आ गयी है, हम अपना ख्याल रख रहे है, माँ।
अकेली हो, अपना ख्याल रखना, माँ।
बाकी, सब ठीक है, माँ💐💐...
-अरूणोदय

" तुम शीतल सी बयार,
बन उतरी मेरे जीवन में!..
स्नेह-स्पन्दन से भींगो कर,
डूबो गयी तन-मन को!!...
"" आज तुम्हारा जन्मदिवस है""
मुझ जैसे अल्हड़, अपरिपक्व, हड़बड़िया टाइप के व्यक्ति को ठीक-ठाक करने के लिए , लगता है ईश्वर ने ओवरटाइम करके तुम्हे गढ़ा होगा, ताकि तुम्हारे साथ एक और जीवन संवर सके।
हो सकता है, मुझे ठीक-ठाक करने में तुम्हे बड़ी मशक्कत करनी पड़ी होगी, अपने सारे विद्याओ को लगाना पड़ा होगा, परन्तु मैं मानता हूँ कि, तुम्हे सफलता तो मिली ही है।
अपनी ईच्छाओं का दमन, वह भी हम सबो की ख़ुशी और समृद्धि के लिए.., यह

तुम्हारे बस का ही संभव है।
आज तुम्हारा जन्मदिवस है, क्या शुभकामना दूँ..? जिसका खुद का जीवन ही पुरे परिवार की शुभकामनाओ के लिए निहित और निष्ठित है !..ईश्वर तुम्हे अपनी पूर्णता से आशीषित करे, स्वास्थ्य और समृद्धि तुम्हारे पर्याय बने.., इतनी छोटी सी बात तो मैं, ईश्वर से माँग ही सकता हूँ। त्याग, सच्चाई, संवेदना इन भावनाओ पर तुम्हारा अस्तित्व टीका है, इनमे बढ़ोतरी हो, ह्रदय से शुभेक्षाये!!..
पुनश्च, जन्मदिवस की शुभकामनाएं, प्यार से🎂💐...
जाने क्या हमने कही,
जाने क्या तुमने सुनी।
क्या ऐसे मौके हम सबो के जीवन में नही आते..? हम दुसरो से कुछ भी कहे, वे वही समझते है, जो वे समझना चाहते है। दूसरे भी हमे कुछ भी कहे, हम वही सुनते है जो हम सुनना चाहते है।
ये तो हुई, दुसरो की बातें!..
हम अपनों से कुछ भी कहे, वे वही समझते है जो, हम कहना चाहते है। हमारे अपने भी हमे कुछ भी कहे, हम वही सुनते है जो, वे हमे सुनाना चाहते है। यही तो फर्क है, अपने और दुसरो से बातें करने का और सुनने का।
कभी यूँ ही बिना कुछ बोले या बिना कुछ सुने, आपस में बातें करके देखिये, सारी भावनाओ का सम्प्रेषण होता महसूस करेंगे। इतनी सारी बातें हो जाएंगी कि, उतनी आप कभी कह भी नही पाते।
यही तो है, मौन-वाचाल का तंत्र...💐
(मौन-वाचाल की व्याख्या, फिर कभी)

माँ गंगे.., क्या माँगू तुझसे..? निःशब्द हो जाता हूँ, तेरे आगोश में, माँ !..कर्म-मोक्ष, ज्ञान-मोक्ष, ध्यान-मोक्ष !..सब तो दे ही दिया, तूने, माँ !!..नमस्तुभ्यम् माँ, नमस्तुभ्यम्..
काश !.मेरे मालिक ने भी इतनी शिद्दत से मुझे चमकाया होता।
मालिक, तेरे अश्क़ के दर-बदर हूँ मैं अभी भी,
बस तेरे रुख़्सार में समा जाऊँ, मैं कभी भी।
क़िस्मत के नेह का तसव्वुर, अभी नही कहीं,
रफ़्ता कभी तो तुझे लाएगा, मेरे रूह-बदर!...
-अरूणोदय

अगर आप बहुत ज्यादा ही प्रतिभावान है,
तो तैयार रहे....
या तो आप कर्ण की तरह छले जाएंगे...,
या फिर,
अभिमन्यु की तरह मार दिए जाएंगे...,
या फिर,
एकलव्य की तरह आपका अंगूठा मांग लिया जायेगा!!..

न तो मैं कर्ण की तरह छला जाऊँगा, इच्छा होगी तो सर्वस्व दान कर दूँगा।
न ही मैं अभिमन्यु की मौत मरूँगा, मरने के पहले अपनी मौत के सारे कारणों को मार दूँगा।
और न ही एकलव्य की तरह अँगूठा देने वाला हूँ, अँगूठा माँगने वाले से ही अँगूठा माँग लूँगा।
(वॉल से(

इन्सान की नकल कर के,
पत्थरों को भी सलीका आ गया।
और इन्सान है कि, आज भी अपने भीतर,

पत्थर ही भरे बैठा है।
-अरूणोदय.

समस्त मातृ-शक्तियो को नमन!.
सृष्टि के हर पल को संवारने वाली, आदि-शक्ति नारी को नमन।
नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग-पग-तल में..
पियूष स्रोत्र सी बहा करो,
जीवन के सुने समतल में!..
इन्ही कुछ चंद पंक्तियों ने शायद इतिहास के अस्तित्व को परिभाषित कर दिया है।
विश्व नारी दिवस की असीमित शुभकामनाएं..

" अहाँ खाली उहाँ बईठ के सडयंत्र करइत रहु.., आ हम इहाँ मर रहल छी "
(ये बातें पहले समझ में नही आती थी, अब बढ़िया से समझ में आ रही है।)
स्वान्तः सुखाय है, बंधू, घबराइये नही।

विडम्बना है न..?
1) आज भोजन सब चाहते है, पर खेती करना कोई नही...!
2) आज पढ़ना सब चाहते है, पर पढ़ाना कोई नही.!
3) आज माँ सब चाहते है, बेटी कोई नही..!

4) आज दोस्त सब चाहते है, निभाना कोई नही..!,
5) आज परिवार सब चाहता है, जिम्मेदारी कोई नही.!
मने ऐसे ही सोच रहे थे.., अपवाद तो हर जगह है।
हमहूँ लागी बेरंग पिया...)

माँ...!
पता नही तुम कभी थी भी या नही..!
जबसे समझना शुरू किया,
सबने समझा दिया कि, तू ही मेरी माँ है..!
तुम्हारे हर स्पर्श ने जीया है, मुझे.,
तू भी तो जी लेती थी, मेरी हर मुस्कान पर..!
कैसे समझू कि, स्पर्श और मुस्कान के,
रिश्ते को ही माँ कहते है.!
इतनी समझ तो आज भी नही मुझे..,
तभी तो माँ को ही खोज किये चलता हूँ।
हर नुक्कड़ पर माँ मिली,
माँ की ममता मिली,

माँ का स्पर्श और मुस्कान भी मिली..,
पर अहसास हुआ, वो माँ सी थी।
तू तो नही मिली न.?
तुम्हारे वज़ूद को कैसे समझू.,
हर निशानी पर कालिख पूता पाया है।
ग़र तू होती अगर,
निशानियाँ भी रंगरेज़ सी रंगी होती.,
जीवन के कुसुम-बेल की तरह।
तुम्हारे हाथों की घिसी हुई लकीरो ने,
बिन कहे बता दिया था..,
जड़ो में कितनी शिद्दत से पानी डाला था, तुमने।
जड़े मजबूत, तो ईमारत भी मजबूत..,
सूना था, देख नही पा रहा हूँ।
तुम होती, तो ऐसा होता,
तुम होती तो वैसा होता..!
ये पुरानी बात, फिल्मो की बात.!
आज तो,
तुम होती तो ऐसा नही होता,
तुम होती तो वैसा नही होता।
तुम्हारा ही रक्त है, मुझमे,
रुलाऊँगा नही तुम्हे,
आकर हँसाऊंगा..!!
-डॉ.अरुणोदय

ख्वाहिशें.., अधूरी सी...!!
तुमने देखा तो सही,
भले ही कशिश के बिना।
ग़र कशिश न दिखी,
तो पैग़ाम कहाँ से लाऊ.?
एक चुन्नट सी उड़ी तुम्हारे बदन से,
लगा, पहाड़ो ने मुकां पा लिया है।
ग़र झीलों ने रोका है, पानी अपना..,
बस तेरे आँखों की ज़ुस्तज़ु हो चली है।
कुछ कह न सके लबो से अपनी,
मुस्कानों ने ओठों को दबाया है।
कमनीय को देख न सके हम,
तराश की बलिहारी है।
मैले हुए जाते है, मेरे अरमाँ,
साँसों ने करीब से गरमाहट को सुना है।
ग़र काफ़िर भी बन सके हम,
मंज़िले भी अफ़ज़ाई है।
शौक़ ए मोहब्बत भी रंग गया हमे,
किसी रंगरेज़ ने पकिया लगाईं है।
तेरी काया जिस्म से फ़ना हो सके,
ऐसी फितरतो ने क़यामत लायी है।
तेरे बोल भी उड़े फ़िज़ा में,
इश्क़ ने भी मतलबो की कसमें खायी है।
बस, ये ज़ुस्तज़ु भी लेते जाओ,
किसी क़ायनात को देख,
किसी दीवाने की हम-सफ़री का,
ईश्तकबाल सहेज लेना।
न जाने किस मुकां.., किस मंज़िल..,

कोई बे-ग़ैर बैठा हो..!

-डॉ.अरुणोदय.

समय कटु हो चला,
तिमिर न भेद पाये तुम।
काल-त्रिकाल सुकाल हुआ,
तटबंध वेग रुका नही।
तिमिर मानस प्राकट्य हुआ,
प्रकांड- प्रभात जीजिविषा।
श्लाघ्य कदम उद्वेल सा,
अगणित कदम माँ भारती।
जीव-प्राण तुम प्राण-प्रीतम,
मंद-सुमंद प्रबुद्धतम्।
किरण उबाल ले चूका,
लालिमा प्रतीत पंथ।
मन-प्रीत सा धवल-धरा,

आशीष दे माँ भारती।
राष्ट्र प्रबुद्ध संचाल से,
वागेश्वरी कृतार्थ हुई।
मानस उद्वेल निष्कपट,
संस्कृति-समृद्धि-संस्कार तुम।
काल-सुकाल श्लाघ्य हो,
त्रिकाल-पट धनुष-ध्वला।
माँ तुम अमर्त्य हो,
प्राण-प्रिय की साँस तुम।
तिमिर-भेद उद् बोध हुआ,
सूर्य किरण की मिठास तुम।
जीव-प्राण की आस ने,
जनम दिया, एक पाश को।
जिन पाश संग हम जी न सके,
उस जनम से ही प्रीत-भाव किया।
प्रीत-भाव की प्रीत ही न समझ सके,
तिन मन को ही विश्वास दिया।
जब विश्वास ही नियति बनी,
नियत ने ही विश्वास किया।
राष्ट्र सु-बेला नियत हो,
बेला ने पी को अंगीकार किया।
देश-धर्म की जीजिविषा,
राष्ट्र-धर्म को अपनाने दो।
जी से जीवन पूर्ण हुए,
जी कर तो जीवन गाने दो।
-डॉ. अरुणोदय.

वर्षांत पर, मनोभावों की अभिव्यक्ति, एक सहमा सा डर...!!
ऐ वक़्त, जरा ठहर.., ज़रा सहम,
क्या पता, क्या बचा..,
क्या रहा अधूरा..!
वक़्त ने तो दिया था सभी को,
एक सा सहारा।
वक्त-वक़्त की चाल है,
बेमिसाल भी बेहाल है..!
अगर कुछ और भी बचा,
तो वक़्त ठहर ही जा।
कुछ और भी विध्वंश, अगर कही..,
निपट ले, यही ज़रा।
कल की कौन जाने,
क्या पता, वो किसकी सुने..,
अगर चलो उस पार प्रिये..,
पावन-परिणय सा हो भला.!
सुबह की बूँद-बूँद में ओस हो,
हर ओस में एक आस हो।
एक आस सा अहसास हो,
अहसास में तुम प्राण प्रिये..!
नव-वर्ष में तुम प्राण प्रिये,
वक़्त को ही साध चलो,
ग़र वक़्त साधन हो चले,
अहसास में, सब प्राण प्रीतम।
सब प्राण प्रीतम जहाँ बस चले,
मनोभाव की संसार तुम।
जहाँ संसार ही प्राण प्रिये,
बस यूँ ही बसो, नव-वर्ष तुम।
ताकीद है, यह वर्ष तुम्हे,

छोड़ न जाओ कोई प्राण यहाँ..!
ग़र ग़म अगर भी साथ हो,
ठहर जा, सहम जा तू वर्ष यही।
जब पाक हो, तेरा ज़मीर,
फिर कहे बिना आ जाना तुम..,
विश्वास रखो, हम हो न हो..,
पर प्राण प्रियो की फ़ौज सब,
ग़र आलिंगन बद्ध हो जाये, सब
फिर भी मौन ही हँसना तुम।
ऐ वक़्त, ज़रा ठहर, ज़रा सहम..!
-डॉ. अरुणोदय

न मैं मीनार का हूँ, न ही झरोखा का हूँ,
ज़रा उतार दे मुझे, आदमियत से गुफ़्तगू करनी है..💐
-अरूणोदय
(चित्र Dhruv Gupt जी के वॉल से साधिकार-साभार.😊)

ज़रा जी लूँ अपने बचपने को आज,
कल का क्या पता, किसके लिए मुझे जीना पड़े..💐
-अरूणोदय

आइसक्रीम भी तो तुम्ही ने खिलाई पापा,
बदले में कुछ तो होना ही था, मेरा क्या कसूर..💐😊.?
-अरूणोदय
(चित्र Dhruv Gupt जी के वॉल से साधिकार-साभार.😊

अब क्या कहूँ कि, मुझे मालूम ही नही और हमरी खबर अखबार में..😊
मन महो-महो तो होता ही है..💐😊

अपने हिस्से का थोड़ा ताज दे दे, ऐ महल,
काश कि, अपनी ख्वाहिशों को मैं भी दफ़न कर सकूँ..💐
-अरूणोदय

रंग बासन्ती धानी चुनरिया,
देहिया में लागेला आग हो रामा,
तनी बरस जा, मेघवा जिया मोरे,
तन-मन भींगहि बलमुआ सकारे..💐
-अरूणोदय

अपने मुल्क पर तो कितने पत्थर फेंक चुके तुम,
कभी अपने ज़मीर पर भी तो पत्थर फेंको,
शायद चोट से ही सही, ज़मीर का जमा लहू बह सके..💐
-अरूणोदय

तासीर एक, पर लबादा अलग-अलग..?
अन्दर से सभी मिले हुए है, जी..😊
-अरूणोदय

मेरी नींद कहीं तुम्हारी किताबों में कैद तो नही..?
स्याह नक़ाब ने तो उसे भी मुझसे छुपा रखा है..💐
-अरूणोदय

सियासती शतरंज़ अब कहाँ, मोहतरमा,
हम तो तस्वीरों के बहाने गुफ़्तगू किया करते है..💐
-अरूणोदय

मन-प्राण सकल तुम प्रीत-प्रीतम,
सिंचित भींगा मन उबल रहा,
तन नेह-मेह स्पन्दित हो,
माँ,
दुलार-गोद मोहे रहने दे..💐
-अरूणोदय

मालन के लगाए पुराने दरख़्त पर,
माली के नई बेल ने जगह ले ली है,

दरख़्त के पत्तो ने जगह तो बना दी है,
वसन्त में फिर आएंगे, पतझड़ में तुम ही सही.💐
-अरूणोदय

एक रोटी दिलवा दो सहेब,
भाई के भूख से मेरी मौत होती है..💐
-अरूणोदय

एकाध पन्नो को पलट कर तो देख,
किसी का दिया हुआ, सूखा गुलाब ही मिल जाये..💐
-अरूणोदय

अम्मी कहूँगा, शिक़वा तो नही करोगी..?
सुना है, बच्चों की मन्नतें क़ुबूल करती हो..💐
-अरूणोदय

गुस्ताखियाँ ही सही, जी भर देखने तो दे,
उम्र भले ही बढ़ी हो,
चाहत और शरारतें, तो आज भी जवाँ है..💐
-अरूणोदय

माँ के दूध में जरा भींग तो जाऊँ,
पानी तो शहरों में भी मिल जाता है..💐

-अरूणोदय

. ज़रा सुकूँ-ऐ-फुरसत दे ऐ ज़िन्दगी,
मैं भी छलाँग लगाऊँ,
बचपना देख कर जी मचलता है..💐
-अरूणोदय

एक रोटी क्या माँग ली मईया,
तेरी आँखों में ही आँसू आ गए..?
-अरूणोदय

मुस्कुराने की कोशिश में , तस्वीर बिगड़ जाती है,
ये आईना भी चेहरे की तरह , फरेब नही समझता...💐
-अरूणोदय

गुलाब त हमहुँ देई सकत है, बाबूजी,
तनिक प्यार से दुई बोल देकर तो देखौ,
बिटिया हूँ, तुम्हारी..💐
-अरूणोदय

मन बसन्त मन फ़ागुन घिरयो,
उड़े गुलाल तन दहक-महक मोरा,
रूचि प्रेम तन डूबत-पीड़त सखी,
पोर-अगन पिया दुःखे गलबहियाँ..💐
-अरूणोदय

मौसम की उलझनों को तो,
बड़े सलीके से सुलझाती हो,
कभी जीवन की बदरंग उलझनों को भी,
अपने इन्ही रंगों से सुलझा दो..💐
-अरूणोदय

फ़ख़्र-ऐ-शहादत ग़र तुम्हे हुई होगी,
अपने सरज़मी के आसमाँ को चूमने पर..!
हम कायर-ऐ-मिज़ाज तो आज भी है,
तुम्हारी शहीदी पर ख़्वाब-ऐ-पुरसी भी नही करते..💐
-अरूणोदय

फ़रिश्तें भी भूल चले, क़यामत के तसव्वुर में,
यादों का बस अक्श बचा, मरहुमियत दर ठिकानों में..💐

-अरूणोदय

एक सुर न मिला मुझे, धुन-काशी की बरसात में,
शहनाई भी बेनूर बजी, सुर-गंगा की ही आस में..💐
-अरूणोदय

दो पल नेमतों की माँगा था, खुदा से,
दे गए खुद ही ख़ुदा, तेरे ही बहाने..💐
-अरूणोदय

शिव-भस्म से निकल कर शिव-राख़ में समाया,
बस यही तो सफर किया, पूरी जद्दोजहद से..💐
-अरूणोदय
.

" फ़ख़्र मत कर तमाशा-ऐ-जश्न का,
मशक्कत किया हुनर, आज परवान पर..💐

मसायलें और भी तरन्नुम है बिटिया,
पहले ज़रा सत्ता की हवस पूरी तो कर लेने दे,
आ, सत्ता की राह में तुझसे ही शुरुआत करते है..!
(कल गुजरात के दाभोल में घटी पतित कुकर्म के सन्दर्भ में, चित्र Dhruv Gupt जी के वॉल से)
-अरूणोदय

कुफ़्र न कर मेरी संजीदा दिलकशी पर,
मौला ने तो तुम्हे भी सुऱ की नेमतें बक्शी है..🎋
-अरूणोदय

" सुर्ख़ पलकों से भींगा है, तेरा जज़्ब-ऐ-क़ायनात,
ज़रा अर्श के साथ,
ख़ाक-ऐ-फ़र्श का मिज़ाज़ भी फरमाये हुज़ूर..🎋"

ऐ शहर, सुना तुमने कभी ज़िन्दगी परोसी थी,
तुम्हारे सहर-ऐ-दामन ने साँसों की रंगीनियाँ भी,
राहें भी तकती किसी रहगुज़र को,
कतरा-ऐ-रंग भी तो हुए दरबदर..🎋
-अरूणोदय

ग़र गुलाल की गुस्ताखियाँ जो हमने नज़रअंदाज़ की,
हुकूमतें पल भर में ही सीने में दफ़न हो चली..💐
-अरूणोदय (अबीर-गुलाल वाले 😊😊)

खबरदार, जो कोई भी मेरे रंग छोड़ाने के लिए, पानी के दुरुपयोग पर भाषण दिया तो..😊.!
अभिये पानी के टंकी में देखे है, फूल टंकी पानी है..😊😊
रंगरसिया के रंग पिया अबहूँ न आवत,
तोरे बहाने मोहे रंग गयो रे रसिया..💐😊
-अरूणोदय (जोगीरा वाले😊😊)

कई दौर चले बदजुबानी और क़त्ल-ऐ-इन्सानियत के,
अब तो मुल्क भी थका,
एक फूल तो खिले पैग़ाम-ऐ-मोहब्बत का..💐
-अरूणोदय

. कुछ शोखियाँ यूँ ही बदस्तूर रहे,
शरारतें भी उम्र कहाँ देखती है..😊💐
-अरूणोदय

ख़ऱ से बुन कर चटाई बना दो माई,
रात के सपने में तुम जागती दीखती हो..💐
-अरूणोदय

मेरे हिस्से का आसमाँ भी तुम्हे मुबारक़,
ज़रा हवा सी छोड़ दे, मेरी साँसों के लिए..💐
-अरूणोदय

वक़्त ऐ अज़ान में हाज़िरी तो कबूल,
ग़र मसले और भी पड़े है, सियासत की राहों में..💐
-अरूणोदय

ज़िन्दगी की राह में साँझ भी आ चली,
कमबख्त इस भूख का सवेरा डूबता ही नही..💐
-अरूणोदय

रंगरेज़ के ईश्क़ से बच के निकले थे, हम.,
क्या पता, गालों की लाली भी चुगली कर बैठेगी..?
तेरे हाथों की कसक ने जो छुआ भीतर तक हमें,
गुलाबी रंगरेज भी नीला हुआ जाता है..💐
-अरूणोदय

अलहदा हम रोये तो सही,
चीखें न निकली तो, हमारी क्या ख़ता..!
-अरूणोदय

मेरी तस्वीर तो स्थिर है, बेटी,
ज़रा अपने ज़मीर को सम्भाल ले..💐
-अरूणोदय

धूप..!
जीवन की राह में,
थोड़ी ज़िन्दगी और दे दे,
काले-स्याह पड़े राहों ने तो,
साँसो में भी वज़न दे दिया है..💐
-अरूणोदय

शिव, तुम त्रिकाल हो,
प्रचण्ड के विकार तुम,
धरा-धवल है, चींखती,
नटराज के अमूर्त पल..!
स्व-विवेक रुका चाण्डाल का,
जिजीविषित हुए अघोर,
मानुष-प्रकल्प शरण हुए,
निर्माण के प्रकाण्ड तुम..💐
-अरूणोदय

ज़िन्दगी साँझ हुई, गलियाँ दर-बदर करते,
अब तो आन मिलो कन्हैया, गली के इस मोड़ पर..💐😊
-अरूणोदय

माँ गौरा ने जीवन से "भाव" किया,
शिव-गौरा ने सृष्टि को "प्रभाव" दिया,
और शिव, आजीवन "अभाव" को परिभाषित करते रहे..💐
यही तो बीज है, शिव-रचित सृष्टि का, जहाँ भाव-प्रभाव-अभाव का तिलस्म गूँथता है, मानस-प्रकल्प को..!
बहरहाल, आज तो गौरा-शिव के विवाहोत्सव पर व्यंजन-रूपी क्रोध-मोह-मद-द्वेष-ईर्ष्या का भोग चढ़ाइये, क्योकि गौरा-शिव को और उनके परिजनों को इन्ही व्यंजनों की चाहत है..!
महा शिव-रात्रि की प्रणम्य शुभकामनाये

एक छटाँक हवा ही तो मांगी थी,
तेरे बन्द पड़े खिड़की की,
तूने वहाँ भी एक कतरा रौशनी ही भेजा,
बची हवा को जलाने को..💐
-अरूणोदय

सुलगती चाहत को कुछ यूँ न सुलगाओ,
मैंने पहले ही बारिश-ऐ-ईश्क़ को कह रखा है..💐😊
-अरूणोदय

बूतों में जान नही होती, ये किसने कहा..?
ज़रा पास आ, चूम कर तो देख,
फूल न मुरझा गये, तो फिर कहना..💐
-अरूणोदय

हमारी नज़रों से दुनिया देख ऐ चचा,
कभी चोट या नफ़रत नही पाओगे,
ग़र खुद की कवायदों ने समेटा तुझे,
पग-पग पर ठोकरें ही खाओगे..💐
-अरूणोदय

ग़र मशगूल हुए तेरी चाहत-ऐ-दरमियाँ,
मशरूफ़ किया अपनों ने आशियाँ,
क़ुव्वत ऐ-मोहब्बत तो देख ऐ दरिया,
तेरी मशक्कत से भी नही डूबे हम..💐😊
-अरूणोदय

देसी अमदी हई, फिर भी प्रानप्यारी के आई वाला हैप्पी वेलेन्टाइन डे तो कह ही सकत है..💐😊😊
रंग-ऐ-महफ़िल न सही,
ख़ाकसार की महफ़िल से हूँ,
ग़र क़िस्मत ने वाज़िब सुर लगा दिया,
महफ़िल-ऐ-रंग का चरागाँ बनूँ मैं..💐
-अरुणोदय

चुनर बासन्ती बदन भ्रमित मोरा,
लहक-लहक मोर जीया तन तरसे,
उड़ी-उड़ी नभ में मन तरु-पल्लव,
उर बन्ध-कटि बन्ध भींगही पनारे..💐
-अरूणोदय

ज़िद न कर ऐ तबस्सुम, दफ़न को राज ही रहने दे..,
ग़र कहने पर आ गए, पर्द भी बेपर्द हुआ आशियाँ जलायेगा..💐
-अरूणोदय

ऐ बाबू,
जिनगी त आपका भी ब्लैक एन्ड व्हाइट ही है,
फ़र्क़ इतना कि, आप भीतर से ब्लैक एन्ड व्हाईट,
और बाहर से कलर फूल दीखते है...!
हम भले ही बाहर से ब्लैक एन्ड व्हाईट है,
पर भीतर से बहुत कलरफुल हूँ..😊😊
जा कह दे उनसे, मंज़िल मिल गयी हमें,
उनके बताए रास्तो का , अब इन्तेज़ार नही..💐
-अरूणोदय

जिन्दगी खूब देख ली, सहेब..,
सियासत देखने को गठबन्धन वाला चस्मा लगाया है.💐
-अरूणोदय

हम तो मशरूफ़ रहे, तेरी रवाइयत के नक़्श में..😊
मियाँ, बेतकल्लुफी ज़रूरी है, दिलों में राज को,
वरना दिलों पर राज करने को , संजीदगी ही सही है..💐😊
-अरूणोदय

काश कि, हम भी कभी खबर बन सके..,
ग़र हमने तो ख़बरी को ही ओढ़ रखा है..!

सियासत की खबरें मेरे सीने पर छपी है,
कभी तो सियासतदां अपनी खबरे पढ़ने आएंगे..!
-अरूणोदय

माँ ,
तू नही तो क्या,
तू तो है, न..!
हमर तिल बहबे..? इन्ही गुड़ वाली बातो के साथ दिन की शुरुआत होती थी।
तिल बहने की बात उन दिनों कभी समझ नही आयी माँ,
आज खूब समझता हूँ कि, तुम्हारे तिल को बहना कितना मुश्किल होता है..!
वह भी जब, तिल की व्यवस्था खुद ही करनी पड़े..! तुम थी तो, न तिल, न गुड़, न अक्षत और न ही लाइ की व्यवस्था करनी पड़ती थी..!
मैंने कभी मोल ही नही समझा कि, तुम्हारे दिए, छोटे से तिल के बहने में भला क्या दिक्कत हो सकती है..?
आज समझता हूँ, कि तुम्हारे नही होने के बाद ही, छोटे से तिल को बहना कितना दुष्कर है..!
आज सुबह संक्रान्ति के पूजनोपरान्त, ही तिल भी खाया, वह भी तुम्हारे हाथ से ही..! लगा नही कि, तुम नही हो..!नही होती तो, भला मैं तिल खाता ही क्यों..?
तुम्हारी बहू और दोनों पोतों ने भी तुम्हारे नाम का तिल खाया है, माँ..😊😊
बस, इतना करना माँ कि, भले ही नाराज़ होकर सामने मत आओ , परन्तु इतना आशीष जरूर देना कि, तुम्हारे तिल को बहने में आयी हर बाधा और विपत्तियों पर तुम्हारे तिल का पताका ही फहराये..!
एक बात और माँ, आज मेरी एक और पुस्तक "राग अशेष" भी छप कर आ गयी, वह भी तुम्हे ही समर्पित है माँ, पहली वाली पुस्तक याद है न.., "भावाशेष" की तरह ही..😊

बहुत दिन हुए माँ, तुझे देखे हुए..! अपना ख्याल रखना और निश्चिन्त रहना कि, तुम्हारे द्वारा खिलाये गये तिल-तिल का हिसाब दूँगा, माँ, भले ही कीमत चुकानी पड़े..(कीमत तो आज भी चूका रहा हूँ माँ, पर कोई चिन्ता नही.)
तुम्हारी बात करते ही न जाने क्यों, मन स्वतः महो-महो हो जाता है..

इतनी जोड़ी आँखे जहाँ हो,
वह मंज़र अच्छा लगता है,
सारा जहाँ घूम आये,
अब अपना घर अच्छा लगता है..💐😊

छुट्टियाँ खत्म, अब तो न बिस्तर पर चिप्स या कुकीज़ के टुकड़े मिलेंगे और न ही मनपसंद चैनल देखने के लिए टीवी रिमोट की छीना-झपटी, और न ही कमरे में बेतरतीब फैले हुए मोज़े, और न ही इस बात पर डिस्कसन होगा कि, अभी स्पोर्ट्स शूज़ पहनने है या फिर कट शू या फिर क्रॉक्स पहन कर ही निकल चलना है...!
अब कल से पुनः मायावी दुनिया के तौर-तरीकों में ढल जाऊँगा।
पर मन अभी भी यादो में महो-महो ..💐😊

ग़र मशगूल क्या हुए दरमियाँ मिटाने को,
तेरे आतिशी ईश्क़ ने मुझे ही मरहूम कर दिया..!
-अरूणोदय

सुदूर ग्रह "मंगल" पर जीवन है या नही, इसे जानने से अधिक महत्वपूर्ण है ,
यह जानना कि, अपने जीवन-ग्रह में "मंगल" है या नही.!
नववर्षागमन की आशीषित सुमंगलकायी शुभेक्षाये..💐😊

बेक़रार रूह का सुकूँ-ऐ-मुक़ाम है, यहाँ,
नज़दीकियाँ हुई नही कि, इरादे ही बदल गए...💐😊
-अरूणोदय

पैरों की बेड़ियों से तन भले ही बाँध लो,
मन को खुली आकाश में उड़ने से कैसे रोक पाओगे..?
प्यार-पाश में तो तुझे बाँधने चली थी मैं,
तुमने तो मेरी गति ही बाँध दी..!
जब तक चलूँगी, तेरे साँसो का सहारा ही रहूँगी,
मेरी साँसो के बाद, ये बेड़ियाँ तेरा सहारा बनेगी..💐😊
-अरूणोदय

मैंने बस एक कतरा रोशनी का माँगा था,
अपने बुझे चूल्हे को जलाने को,
तुमने तो मेरे घर को ही जला दिया,
अपनी हवस मिटाने को..💐
-अरूणोदय

चीर भींगा, पत्ते भींगे,
भींगे धरा-जमीर,
मन प्यासा, सूखा रहा,
भींगो मोहे, रघुबीर..💐
-अरूणोदय

अपनी हाथ की रेखाओं को,
मेरे तलवे पर उकेर दो,
आज मेरे क़दमों को सम्भाला है,
कल तेरे हाथों को संभालूँगा..💐
-अरूणोदय

लबों से ईश्क़ गिरते नही,
अल्फ़ाज़ साये की ओट लिए चलते है,

हवाओं ने ज़रा बेतकल्लुफी क्या दीखायी,
आप तो बस यूँ ही बरस पड़े..💐😊
-अरूणोदय

तालियाँ ग़र रुके तो सही,
अल्फ़ाज़ों के बयाँ वास्ते,
दफ़न तो और भी है, सीने में,
राज़ की पेशगी तो मुक़म्मल हो..💐
-अरूणोदय

उठ ऐ ज़फर, वतन वापसी का दौर है अभी,
सियासी इन्तेज़ार भी रुखसती के ही दौर में है💐..
-अरूणोदय

पिछले लम्बे समय से टटका-टटकी ही परोसा जा रहा था, आज एक लम्बे अन्तराल के बाद, बसियौरा का स्वाद मिला, मित्रो..😊
कुछ भी हो, इसका अलग स्वाद है..💐😊😊

हलक सूखा होगा, धूप की तपिश में,
आधा ही कटा हूँ, छाँह तो दे ही सकता हूँ..💐😊
-अरूणोदय

शुक्र है दिल लिए तहख़ाने में बैठा हूँ,
वरना दिमाग के साथ, यह दिल भी,
रहगुज़र के ही काबिल होता..💐😊
-अरूणोदय

दे सको तो एक रोटी दे दो,
ग़र सिक्के तो तुम भी माँग कर ही लाते हो..💐😊
-अरूणोदय

किया विसर्जन टूटी मूर्ति,
बहा भाव-विश्वास. !
अक्षत-बिन्दिया-कुमकुम-रोली,
उड़े नभान्तर श्वास..💐😊
-अरूणोदय

चुपके से ग़र दीख गया, एक चाँद सा कोई,
आसमाँ के चाँद ने भी अपनी रुख़्सती कर ली..💐
😊
-अरूणोदय

जब ज़मीं अपनी, आसमाँ अपना,
छोड़ सरहदों को,
हमें कौन सा वहाँ घर बसाना है.💐😊.?
-अरूणोदय